गणेश चतुर्थी - 14 सितम्बर 2026

सिद्धिदायक गणपति साधना

बलहीन व्यक्ति हमेशा दुःखों, विपदाओं से घिरा रहता है। अपनी सामर्थ्यानुसार प्रयत्न करने पर भी वह अपने-आप को उन संकटों में घिरा ही पाता है, एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी...

इस प्रकार कोई न कोई बाधा उसके जीवन में दुःखों का कारण बनती ही है... और ये बाधाएं, अड़चनें ही शत्रु बनकर उसके सुखी जीवन में दुःख का जहर घोल देती हैं...

किन्तु वही बलहीन व्यक्ति शक्तिवान बन सकता है, और समस्त संकटों से छुटकारा पा सकता है। आवश्यक है 'सिद्धिदायक गणपति साधना' अवश्य सम्पन्न करें।

गणपति साधना अत्यन्त ही सरल और सुगम मानी जाती है और तीक्ष्ण प्रभावकारी भी। यदि किसी व्यक्ति का कोई कार्य बार-बार प्रयत्न करने पर भी न हो पा रहा हो या किसी साधक को किसी साधना में बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिल रही हो, तो ऐसे में **'सिद्धिदायक गणपति साधना'** करने पर मार्ग में आये अवरोधों को हटाकर सफलता व श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है, इससे यह स्पष्ट होता है, कि सिद्धिदायक गणपति साधना, साधक के लिये जितनी भौतिक उन्नति में लाभदायक है, उतनी ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी सर्वोपरि है।

सिद्धिदायक भगवान गणपति की लीलाओं तथा रूपों का वर्णन विभिन्न पुराणों आदि में उपलब्ध होता है। भगवान गणपति सर्व समर्थ देव हैं। वास्तव में वे अज, अनादि एवं अनन्त हैं और अपनी विभिन्न लीलाओं प्राकट्य स्वरूप, जो कि परम वन्दनीय, परम अनुपम, परम मनोरम हैं, उसमें प्रत्येक साधक के समक्ष उपस्थित होते ही हैं उनके विघ्नों को हरने के लिए।

साधना विधान

- इस साधना की सफलता के लिए शीघ्र सफलतादायक **'महागणपति यंत्र'**, **'दो विघ्नविघातक मंगल गुटिकाएं'** एवं **'सौभाग्यदायिनी मूंगा माला'**, जो कि विशेष मंत्रों से अनुप्राणित एवं चेतना युक्त हों, साधक मंगा लें।
- सिद्धिदायक गणपति साधना **गणेश चतुर्थी 14 सितम्बर 2026 अथवा किसी भी चतुर्थी या किसी भी बुधवार** प्रातः काल सम्पन्न करनी चाहिए।
- साधना में साधक को **पूर्व या उत्तर दिशा** की ओर मुख करके बैठना चाहिए।
- **पीले वस्त्र धारण करें** तथा ऊपर से गुरु चादर ओढ़कर यह साधना सम्पन्न करें।
- पूरे साधना काल में घी का अखण्ड दीपक जलता रहे। साधना कक्ष अगरबत्ती एवं धूप की सुगन्ध से आपूरित होना चाहिए।

अपने सामने किसी चौकी पर **लाल वस्त्र** बिछाकर किसी प्लेट पर कुंकुम या केसर से **'स्वस्तिक'** का चिह्न बनाकर पुष्पों का आसन देकर **'महागणपति यंत्र'** को स्थापित कर दें। पुष्पों का आसन देकर यंत्र के दोनों ओर **'विघ्नविघातक दो मंगल गुटिकाएं'** एक-एक गुटिका स्थापित कर दें।

लकड़ी के बाजोट पर ही आधा जल से भरा हुआ एक कलश स्थापित करें, कलश के मुंह पर मौली/कलावा बांध दें। इसके बाद एक नारियल, जिसमें पानी हो, दोनों हाथों में लें, उसमें कलावा बांधकर, कुंकुम का तिलक करें तथा एक पुष्पमाला नारियल को पहनाकर, मन ही मन यह प्रार्थना करें, कि मेरे जितने भी पाप-दोष हैं, वे समाप्त हों और मुझे इस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त हो, फिर इस नारियल को कलश के ऊपर स्थापित कर दें।

कलश और गणपति यंत्र स्थापित करने के पश्चात् दोनों हाथों में पुष्प लेकर सिद्धिदायक गणपति का ध्यान करें -

गजानन भूत गणधि सेवितं
कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं;
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

तत्पश्चात् पुष्प गणपति यंत्र पर अर्पित कर दें तथा अपने दोनों हाथों को आह्वान की मुद्रा में ऊपर उठाकर भगवान गणपति का आह्वान करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

आगच्छ भगवन् देव सर्वसौभाग्य दायक।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् यत्र स्थिरो भव।।

यंत्र को किसी दूसरे पात्र में रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए जल, पंचामृत और पुनः जल से स्नान करायें -

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव! शान्तिं कुरुष्य मे।।

पुनः जल से स्नान कराने के पश्चात् वस्त्र से पौंछकर इसे पुनः प्लेट में स्थापित कर दें। इसके बाद यंत्र पर कुंकुम से 5 तिलक करें, 'गुटिकाओं' पर तिलक करें, फिर अक्षत, पुष्प, धूप व दीप से उनका पूजन करें। ये दोनों गुटिकाएं **'शुभ'** और **'लाभ'** की प्रतीक हैं। इसके पश्चात् **'सौभाग्यदायिनी मूंगा माला'** से निम्न सिद्धिदायक गणपति मंत्र की 5 माला जप करें -

मंत्र

ॐ श्रीं गं गणपतये श्रीं गं सिद्धये नमः

मंत्र जप के पश्चात् गणपति यंत्र पर पुष्प अर्पित करें तथा भगवान गणपति को बेसन के लड्डू का भोग लगायें। नैवेद्य अर्पण के पश्चात् गणपति आरती सम्पन्न करें और सभी को प्रसाद वितरण कर स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें। एक दिवसीय साधना के पश्चात् साधक यंत्र, माला और गुटिकाओं को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

जो साधक अपने घर में गणेश चतुर्थी को मूर्ति विराजमान करते हैं वे गणेश चतुर्थी (14 सितम्बर 2026) को ऋद्धि -सिद्धि गणपति साधना सम्पन्न करने के पश्चात् यंत्र के ऊपर ही गणपति का विग्रह स्थापित कर दे और मंगल गुटिकाएं - शुभ-लाभ को विग्रह के दोनों ओर पुष्पों का आसन देकर स्थापित कर दें तथा सौभाग्यदायिनी मूंगा माला को गणपति को पहना दें।

आप जितने दिनों तक गणपति स्थापित रखें, उतने दिनों तक नित्य प्रति प्रातः और सांय गणपति विग्रह के समक्ष - ॐ श्रीं गं गणपतये श्रीं गं सिद्धये नमः मंत्र का 10 मिनट जप करें तथा उसके पश्चात् गणपति को भोग अर्पित कर आरती सम्पन्न करें।

गणपति विसर्जन दिवस पर गणपति विग्रह के साथ ही गणपति यंत्र, चारों गुटिकाओं और माला को भी विसर्जित कर दें। भगवान गणपति की कृपा से आपकी कामनाएं अवश्य ही सिद्ध होगी।